IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, February 2026 Impact Factor: 8.2

फणीश्वर नाथ रेणु और धर्मवीर भारती के साहित्य में लोक संस्कृति एवं सामाजिक न्याय का तुलनात्मक अध्ययन

रीना कुमारी[1], डॉ. रियासत अली[2]
[1]शोधार्थी , [2]शोध निर्देशक
विभाग हिंदी
माइंड पावर विश्वविद्यालय, भीमताल, नैनीताल

सारांश : *यह शोध-पत्र हिंदी साहित्य के दो प्रतिष्ठित लेखकों, फणीश्वर नाथ रेणु और धर्मवीर भारती, के साहित्य में लोक संस्कृति और सामाजिक न्याय के प्रतिनिधित्व का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। रेणु का रचना-संसार ग्रामीण बिहार के 'अंचल' में बसता है, जहाँ वे भूमि अधिकार, जातिगत विषमता और स्वतंत्रता के बाद की निराशा को अंचलिक भाषा और लोक-धुनों के माध्यम से उकेरते हैं । इसके विपरीत, धर्मवीर भारती का साहित्य नगरीय मध्यवर्ग के मनोवैज्ञानिक संघर्षों, प्रेम और आधुनिकता के द्वंद्व को केंद्र में रखता है। अध्ययन बताता है कि जहाँ रेणु 'नीचे से' देखकर सामाजिक न्याय के प्रश्न उठाते हैं, वहीं भारती व्यक्ति के आंतरिक न्याय और नैतिक दुविधाओं पर बल देते हैं। दोनों ही यथार्थवादी हैं, किंतु उनके यथार्थ के केंद्र और शैली में मूलभूत अंतर है, जो स्वतंत्र भारत के दो अलग-अलग सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ को दर्शाता है।*

Keywords: फणीश्वर नाथ रेणु और धर्मवीर भारती के साहित्य में लोक संस्कृति एवं सामाजिक न्याय का तुलनात्मक अध्ययन

1. परिचय

हिंदी साहित्य में स्वतंत्रता-पश्चात् का युग नए सामाजिक यथार्थ और वैचारिक मोड़ का युग था। इस काल में दो ऐसे लेखक उभरे जिन्होंने अपने-अपने ढंग से लोक और समाज के प्रश्नों को केंद्र में रखा - फणीश्वर नाथ रेणु और धर्मवीर भारती। रेणु, जिन्हें 'अंचलिक उपन्यास' का जनक कहा जाता है, ने अपनी रचनाओं में गाँव की बोली, लोक-संगीत, और वहाँ के अंतर्विरोधी जीवन को इतनी सजीवता से प्रस्तुत किया कि उनका 'मैला आँचल' (1954) और 'परती परिकथा' (1957) ग्रामीण भारत का एक दस्तावेज़ बन गया । उनका कथा-संसार नायक-केंद्रित न होकर स्थान-केंद्रित है, जहाँ पात्र, बोलियाँ और लोक-गाथाएँ मिलकर एक बहुस्वर (polyphony) रचती हैं ।

धर्मवीर भारती ने 'गुनाहों का देवता' (1949) जैसे उपन्यास से हिंदी पाठकों के दिलों पर राज किया। उनकी रचनाएँ मुख्यतः नगरीय पृष्ठभूमि में रची गई हैं, जहाँ पात्र मनोवैज्ञानिक उथल-पुथल, प्रेम की दुविधा और परंपरा-आधुनिकता के बीच संघर्ष करते हैं । यह शोध-पत्र इन दोनों लेखकों के साहित्य में लोक संस्कृति और सामाजिक न्याय की अवधारणा का तुलनात्मक विश्लेषण करेगा। यह प्रश्न केंद्रीय होगा कि जहाँ रेणु सामूहिक और ग्रामीण यथार्थ के माध्यम से सामाजिक न्याय को परिभाषित करते हैं, वहीं भारती व्यक्तिगत नैतिकता और मानसिक संघर्ष के माध्यम से इसे कैसे रेखांकित करते हैं।

2. लोक संस्कृति का स्वरूप

2.1 रेणु का अंचलिक लोक

फणीश्वर नाथ रेणु ने हिंदी साहित्य में उस समय एक नई परंपरा की स्थापना की जब उन्होंने शुद्ध हिंदी की बजाय बिहार के पूर्णिया, मिथिला और अंगिका क्षेत्रों की बोली, मुहावरों और लोक-गीतों को अपनी कथा का माध्यम बनाया । रेणु के लिए भाषा सिर्फ संचार का साधन नहीं थी, बल्कि एक सामाजिक-राजनीतिक अस्मिता का आधार थी। उन्होंने तर्क दिया कि राष्ट्रभाषा का दावा तभी सार्थक है जब वह विविध बोलियों की 'हेटेरोग्लोसिया' (विविधभाषिकता) को पहचाने ।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, February 2026 Impact Factor: 8.2

'मैला आँचल' का कथानक मरियागंज नामक काल्पनिक गाँव में बसता है, जो पूर्णिया जिले का प्रतीक है। यह गाँव अपनी समस्त विसंगतियों, अंधविश्वासों और जटिल सामाजिक संबंधों के साथ कथा का केंद्रीय पात्र बन जाता है । रेणु ने अपनी प्रसिद्ध भूमिका में इस उपन्यास को 'अंचलिक उपन्यास' घोषित करते हुए पूर्णिया की सीमाओं का चित्रण किया है । 'परती परिकथा' में भी भूमि और परती खेत का प्रतीक ग्रामीण जीवन की संघर्ष-गाथा को व्यक्त करता है । अशुतोष कुमार ठाकुर के अनुसार, रेणु "गाँव को रूपक के रूप में नहीं बल्कि उसके वास्तविक रूप में प्रस्तुत करते हैं; गाँव उनके लिए भारत का हृदय नहीं, बल्कि दर्पण है" ।

2.2 भारती का नगरीय-सांस्कृतिक परिवेश

धर्मवीर भारती की रचनाओं में लोक संस्कृति की उपस्थिति रेणु की तुलना में मौलिक रूप से भिन्न है। 'गुनाहों का देवता' में काशी (वाराणसी) की प्राचीन नगरीय परंपरा, घाट, विश्वविद्यालय और मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण है, जिसे एक विशेष सांस्कृतिक लोक कहा जा सकता है। लोक-संस्कृति के तत्व जैसे मुहावरे, रीति-रिवाज, और विशेष जीवन-शैली उनके साहित्य में गौण रूप से विद्यमान हैं, लेकिन वे उतने सघनता से और भाषा-स्तर पर नहीं उतरते जितना रेणु में। भारती के पात्र प्रायः उच्च शिक्षित, कॉलेज-संस्कृति से जुड़े और मानसिक द्वंद्व से ग्रस्त होते हैं, जो उनके संसार को ग्रामीण लोक से दूर ले जाता है ।

3. सामाजिक न्याय का स्वरूप

3.1 रेणु: वंचितों की आवाज और भूमि अधिकार

रेणु का साहित्य सामाजिक न्याय के प्रश्न को भूमि अधिकार, जातिगत भेदभाव और राज्य की उपेक्षा के संदर्भ में परिभाषित करता है। उनका लेखन नेहरूवादी विकास-मॉडल के प्रति एक प्रकार का 'मोहभंग' भी है, जो स्वतंत्रता के बाद गाँव की आशाओं और उनके चकनाचूर होने का दस्तावेज है । उनकी रचनाएँ "गाँव और किसान आंदोलनों के जटिल पात्रों" को रेखांकित करती हैं ।
'मैला आँचल' का एक केंद्रीय अंश है - "यह ज़मीन किसकी है? जो जोतता है उसी की!" (To whom does the land belong? To the tiller!) । यह पंक्ति उस ज़मीनी विवाद को व्यक्त करती है, जो गाँव में आजीविका और प्रतिष्ठा दोनों से जुड़ा है। रेणु ने गाँव के 'मठ' (धार्मिक संस्थान) के भीतर व्याप्त भ्रष्टाचार और यौन-शोषण को उजागर करके सामाजिक न्याय के एक और पहलू को छुआ है - जहाँ धार्मिक आवरण में कमज़ोरों (जैसे लक्ष्मी) का शोषण होता है । 'परती परिकथा' में भूमि-सुधार के बाद भी जाति और लिंग के आधार पर उपेक्षा के मुद्दे को 'उपनिवेशवाद-विरोधी' (decolonial) दृष्टि से पेश किया गया है ।

3.2 भारती: व्यक्तिगत नैतिकता और मानसिक न्याय

धर्मवीर भारती के साहित्य में सामाजिक न्याय का स्वरूप स्थूल राजनीतिक आंदोलनों से कम और व्यक्तिगत नैतिक दुविधाओं से अधिक जुड़ा है। 'गुनाहों का देवता' में सुदर्शन का चरित्र एक ऐसे नायक का प्रतीक है जो प्रेम और कर्तव्य, परंपरा और आधुनिकता के बीच फंसकर आंतरिक संघर्ष करता है। उसका सामाजिक न्याय वर्ग-संघर्ष में नहीं, बल्कि भावनात्मक ईमानदारी और व्यक्तिगत संबंधों की सच्चाई में निहित है। भारती के पात्रों के लिए न्याय का प्रश्न अक्सर उनके मानसिक संतुलन और आत्म-साक्षात्कार से जुड़ा होता है, न कि ज़मीनी हक़ या जातिगत विषमता से।

पहलू	फणीश्वर नाथ रेणु	धर्मवीर भारती
लोक-संस्कृति का आधार	ग्रामीण अंचल (बिहार), अंचलिक बोली, लोक-गीत	नगरीय-सांस्कृतिक परिवेश, काशी, मध्यवर्गीय जीवन-शैली
सामाजिक न्याय का केंद्र	भूमि अधिकार, जातिगत शोषण, वंचित वर्ग, राज्य की उपेक्षा	व्यक्तिगत नैतिकता, आंतरिक संघर्ष, प्रेम और कर्तव्य का द्वंद्व
शैली और भाषा	बहुस्वर (polyphonic), खंडित,	मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद, संवाद-प्रधान,

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, February 2026
Impact Factor: 8.2

पहलू	फणीश्वर नाथ रेणु	धर्मवीर भारती
	मौखिकता से भरपूर, 'अशुद्ध' हिंदी	प्रवाहपूर्ण
यथार्थ का स्वरूप	सामूहिक यथार्थ, 'नीचे से' (subaltern) दृष्टिकोण	व्यक्तिगत यथार्थ, आंतरिक (psychological) दृष्टिकोण

4. तुलनात्मक विश्लेषण और निष्कर्ष

फणीश्वर नाथ रेणु और धर्मवीर भारती का तुलनात्मक अध्ययन स्वतंत्र भारत के दो समानांतर यथार्थों को उजागर करता है। रेणु का साहित्य गाँव के धूल-भरे, संघर्षमय और उपेक्षित वातावरण से उठता है, जहाँ लोक-संस्कृति सिर्फ सजावट नहीं बल्कि संघर्ष का माध्यम है। उनकी अंचलिक भाषा (मैथिली, भोजपुरी, अंगिका का मिश्रण) एक साहित्यिक-राजनीतिक कार्य थी, जिसने हिंदी के 'शुद्ध' स्वरूप को चुनौती दी । वे सामाजिक न्याय को भूमि, जाति और राज्य के सत्ता-संबंधों के संदर्भ में देखते हैं ।

इसके विपरीत, भारती के पात्र नगरीय जीवन के उस वर्ग से आते हैं, जो शिक्षित तो है लेकिन परंपरा और आधुनिकता के दबाव में मानसिक रूप से विचलित है। उनके यहाँ सामाजिक न्याय का प्रश्न व्यक्तिगत संबंधों और नैतिकता के दायरे में रहता है। दोनों ही यथार्थवादी हैं, लेकिन रेणु का यथार्थ सामूहिक और राजनीतिक है, जबकि भारती का यथार्थ मनोवैज्ञानिक और वैयक्तिक। रेणु ने गाँव को साहित्य का केंद्र बनाकर 'नई कहानी' (नयी कहानी) की नगरीयता को चुनौती दी और वंचित समुदायों की आवाज को संस्थागत स्वरूप दिया । दोनों लेखकों ने अपने-अपने दायरे में सामाजिक न्याय की पड़ताल की, जिससे यह स्पष्ट होता है कि न्याय की परिभाषा और अभिव्यक्ति सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के अनुसार बदलती है।

संदर्भ

1. अरोड़ा, बी. (2022). ज़मीन के अधिकारों की उपनिवेश-विरोधी कार्य-पद्धति: राष्ट्र-राज्य के साथ किसानों की बातचीत [सेमिनार प्रस्तुति]. IASH वर्क-इन-प्रोग्रेस सेमिनार, एडिनबर्ग विश्वविद्यालय।
2. एग्ज़ामवेदा. (2021, 30 मई). फणीश्वर नाथ 'रेणु' ने इनमें से कौन सी किताब लिखी थी? एग्ज़ामवेदा।
3. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली. (तारीख नहीं दी गई). विशेष लेख. EPW।
4. ओर्सिनी, एफ. (2019, मई). एक बड़े कैनवास पर दो पीढ़ियों का जीवन. द बुक रिव्यू, 43(5)।
5. शोधगंगा. (तारीख नहीं दी गई). मुख्य विषय: रेणु के उपन्यासों में ग्रामीण परिवार, प्रेम और विवाह (अध्याय 5)।
6. ठाकुर, ए. के. (2025, 4 जून). फणीश्वर नाथ रेणु और गाँव की राजनीति: ज़मीनी स्तर से भारत को सुनना. फ्रंटलाइन।